❑ **खण्डकाव्य**—भारतीय काव्यशास्त्र में सर्वप्रथम रुद्रट ने कथा-आख्यायिका आदि की तरह प्रबन्ध-काव्य के महत् एवं लघु (खण्ड) दो रूप बताए। लघुकाव्य का स्वरूप-निर्धारण करते हुए उन्होंने लिखा है कि इसमें चतुर्वर्ग-फल में से कोई एक हो, तथा किसी एक रस का पूर्ण रूप से, अथवा अनेक रसों का अपूर्ण रूप से वर्णन होना चाहिए।

विश्वनाथ को 'खण्डकाव्य' नाम और उसकी निश्चित कल्पना का श्रेय दिया जा सकता है। उन्होंने भाषा या विभाषा में रचित, सर्गबद्ध, समस्त संधियों से रहित, एक कथा की निरूपक पद्यबद्ध रचना को 'काव्य' की संज्ञा दी और एक देश का अनुसरण करने वाली रचना को 'खण्डकाव्य' कहा।

विश्वनाथ के बाद संस्कृत साहित्यशास्त्र में खण्डकाव्य उपेक्षित रहा। हिन्दी विद्वानों ने भी इस दिशा में मौलिक चिन्तन न कर विश्वनाथ के पूर्वालिखित सूत्र का भी भाष्य किया है। निष्कर्षतः

— खण्डकाव्य प्रबन्धकाव्य का एक भेद है। अतः तात्विक दृष्टि से इसमें महाकाव्य के लगभग सभी तत्व रहते हैं किन्तु आकार स्वरूप की भिन्नता के कारण इन तत्वों में अन्तर पड़ जाता है। खण्ड-काव्य में महाकाव्य के तत्वों का संकोच हो जाता है, यथा—

— महाकाव्य का कथानक अत्यन्त विस्तृत होता है। विभिन्न प्रकार के वर्णनों तथा प्रासंगिक कथाओं से उसे और भी विस्तृत बना दिया जाता है। किन्तु खण्डकाव्य में कथा-विस्तार नहीं होता और न ही इसमें प्रासंगिक कथाओं का जमघट होता है। हाँ, कथा-सम्बन्धी कुछ बातें दोनों में समान हो सकती हैं, यथा-कथा-प्रसंगों का मार्मिक चयन, कथा-संगठन, रोचकता आदि।

— खण्डकाव्य में पात्रों की संख्या महाकाव्य की अपेक्षा कम होती है। उनका चारित्रिक विकास भी पूरी तरह नहीं किया जा सकता, फिर भी उनके चरित्र की सभी रेखाएँ संक्षेपतः प्रकट हो जाती हैं। नायक दोनों में उच्चवंश का होता है। 'सुदामा-चरित्र' का नायक उच्चवंश का ब्राह्मण है, 'पंचवटी' का नायक लक्ष्मण श्रेष्ठ क्षत्रिय वंश का है।

— महाकाव्यों में शृंगार, वीर और शान्त इन तीन रसों में से कोई एक रस अंगीरूप और अन्य रस अंग रूप होते हैं। खण्डकाव्य में इस प्रकार का कोई नियम नहीं है। उसमें किसी एक रस का परिपाक प्रधान रूप से किया जाता है और अन्य रस गौण रूप में रहते हैं। यह भी हो सकता है कि खण्डकाव्य में किसी एक रस का परिपाक न दिखाकर किसी उदात्त भाव का चरम उत्कर्ष दिखाकर पाठक को मुग्ध कर दिया जाय। 'सुदामा-चरित' में किसी रस विशेष का चमत्कार न दिखाकर मैत्री-भाव का ही चरम उत्कर्ष दिखाया गया है।

— भारतीय काव्यशास्त्रियों के अनुसार महाकाव्य सर्गबद्ध होना चाहिए, प्रत्येक सर्ग में एक छन्द का प्रयोग होना चाहिए तथा सर्गान्त में छन्द परिवर्तन होना भी आवश्यक है। किन्तु खण्डकाव्य में ऐसा कोई अनिवार्य नियम लागू नहीं होता। उसमें भावानुकूल छन्द-योजना को ही महत्व दिया जाता है। 'सुदामा-चरित' में एक ही पृष्ठ पर दोहा, कवित्त, सवैया आदि कई छन्द है। वास्तव में खण्डकाव्य में महाकाव्य की अपेक्षा अभिनेयता की मात्रा अधिक होती है। इसी कारण कवि को पात्र, परिस्थिति और भावना के परिवर्तन के साथ छन्द भी परिवर्तित करना पड़ता है।

— खण्डकाव्य का प्रभाव महाकाव्य के समान महत् गहन और युगान्तरव्यापी नहीं होता, क्योंकि खण्डकाव्य का उद्देश्य उपदेश होता है और महाकाव्य का सन्देश। उपदेश काल-सापेक्ष होता है और सन्देश सनातन और मानवताव्यापी होता है।

Scanned with CamScanner

संक्षेप में खण्डकाव्य में महाकाव्य की भाँति कोई महत् उपदेश नहीं होता, कथा का आख्यान होना आवश्यक नहीं, वस्तु-विस्तार के सीमित होने से प्रासंगिक कथाओं का अभाव रहता है, सर्गबद्धता एवं छन्द के नियम शिथिल होते हैं।

अन्त में खण्डकाव्य के सम्बन्ध में एक बात स्पष्ट कर देनी आवश्यक है कि खण्डकाव्य किसी काव्य-रूप का खण्डमात्र नहीं है। वस्तुतः यह शब्द अनुभूति के उस प्रभाव की ओर संकेत करता है जिसमें जीवन अपने सम्पूर्ण रूप में प्रभावित न कर आंशिक या खण्ड रूप में ही प्रभावित करता

Scanned with CamScanner